



Shyamacharan Lahiri and His wife Kasimoni Debi

श्रीश्री श्यामाचरण लाहड़ी ---काशीमणि देवी

श्यामाचरणरे बरिाहरे दीरुघकाल पर एइ भाडा बाड.तिहे १८७३ खृष्टाब्दे जगन्नाथदेवेरे स्नान यात्रार दनि ताँहार ज्येष्ठपुत्र तनिकड.ि लाहड़ी महाशय.रे जन्म हय.। काशीमणि देवी अत्यन्त शान्त, दयावती ० सुगृहणी छलिनै । स्वामीर प्रचण्ड अर्थकष्टरे समय.० तनि परिम धरैय सहकारे सबदकि सामलाइया चलतिने। ताँहार सुबिचेना ० व्यवस्थार गुणे पतरि सामान्य उपार्जन हइते सञ्चय करया। १८७४ खृष्टाब्दे गरुड.शेवरै एकटि बसतवाटि क्रय. करया सखाने बास करतिने लागलिनै। एइखाने १८७५ खृष्टाब्दे रथयात्रार दनि ताँहार कनश्ठ पुत्र दुकड.ि लाहड़ी महाशय.रे जन्म हय.। एइ बाड.तिहे १८७८ खृष्टाब्दे वड. कन्या हरमिति, १८९० खृष्टाब्दे मध्यमा कन्या हरकिामिनी ० १८९३ खृष्टाब्दे कनश्ठा कन्या हरमिोहनीर जन्म हय.। श्यामाचरण एइखानेइ समग्र जीवन अतविाहि करयाछलिनै। काशीमणि देवी कखन० अलसबावे समय. काटाइतने ना। प्रातःकाले सर्वप्रथम आगत भिक्षुकके स्वहस्ते भिक्षा दतिने। ताँहार बश्वास छलि ये लक्ष्मीछाडार घरै भिारी आसे ना, ताइ काने दनि भिारी आसति बलिम्ब हइले ताँहार दुश्चन्तिार सीमा थाकति ना। स्वामीर अल्प आय. थाकाय. समस्त गृहकार्य्य स्वहस्ते करतिने। अतथि ० आगन्तुक प्राय.इ आसति। तनि स्वहस्ते रन्धन करया, सकलके तृप्ति-पूरुवक भोजन कराइतने। तखनकार दनि स्त्रीलोकदरे मध्ये प्रवाद छलि ये सब

স্ত্রীলোক লখোপড়া শেখে তাহারা পরবর্তী জীবনে গণিকা হইয়া জন্মগ্রহণ করে। তাই কাশীমণি দেবী লখোপড়ায় বন্দি ছিলেন। কিন্তু শ্যামাচরণ নজি লখোপড়া পছন্দ করতেন। তাই তিনি গভীর রাত্রে নজি স্ত্রীকে কিছু কিছু লখোপড়া শিখাইয়াছিলেন। পরবর্তীকালে দেখা যায়, কাশীমণি দেবী ধর্মগ্রন্থ সমূহ নজিই পাঠ করতেন। এই পুণ্যবতী নারী স্বামীর প্রদর্শিত যোগপথে সাধনা করিয়া দীর্ঘ জীবন লাভ করিয়াছিলেন। তিনি সাধনার এক উচ্চ অবস্থায় পৌঁছাইতে সক্ষম হইয়াছিলেন। কাশীমণি দেবী প্রায় ৯৪ বৎসর বয়সে ১৩৩৭ সালের ১১ই চৈত্র, ইংরাজী ১৯৩০, সজ্ঞানে কাশীলাভ করেন।

